



PROF. KATTUNGAL SUBRAMANIAM MANILAL

Prof. Kattungal Subramaniam Manilal is a Botanist who took the initiative to organize the Taxonomists of India and to establish the Indian Association for Angiosperm Taxonomy (IAAT) at a time when the importance of biodiversity was not recognized by many, and when the subject of Taxonomy was almost dead and abandoned by all.

2. Born on 17th September, 1938, Shri Manilal received his Bachelor of Science from the University of Kerala, Master of Science and Ph.D from Sagar University in Madhya Pradesh. He is an Emeritus Professor, University of Calicut and has been associated with various Institutions such as, Botanical Survey of India, Zoological Survey of India, Indian Botanical Society, National Academy of Sciences, Society of Ethno Botanists, Royal Society of London, Smithsonian Institution, various Universities in the Netherlands, Japan, Singapore and Moscow in research and development in Botanical Sciences.

3. Hortus Malabaricus (Garden of Malabar), with 12-volumes in Latin, compiled by H. A. Van Rheede, is the first printed book on the plant wealth of Malabar. This monumental work, though released in the later part of 17th Century, remained inaccessible to the scientific community till Prof. Manilal brought out the English Edition with modern Botanical nomenclature. Added to that, this has given an insight to the history and politics of India and even the development of Malayalam as a common language of Kerala. He also has done extensive research in Biodiversity of Kerala especially that of "Silent Valley", Pollution by Radioactive Chemicals, Orchids of Kerala and Origin and Evolution of Flower. He has been instrumental in making the University of Calicut, a Centre of Excellence in Plant Taxonomy and developing a new breed of Taxonomists and also establishing a Biomass Research Centre at the University. He has conducted extensive studies on the social, cultural, political, historical and linguistic aspects of Botanical Researches, proving the relevance of Taxonomy to the Nation.

4. Prof. Manilal has been the President of Indian Botanical Society and is the recipient of several awards and honours. Her Majesty Queen Beatrix of the Netherlands has nominated him as "Officer in the Order of Orange-Nassau" for his contribution in promoting the shared heritage of the Netherlands and India as well as for his efforts to intensify the cultural and social relations between the countries. He received Janaki Ammal National Award for Taxonomy, instituted by the Ministry of Environment & Forests. He is a recipient of Swadeshi Sastra Puraskar by the Swadeshi Science Movement. He has been selected for Y D Tiagi Gold Medal of the IAAT and Viswambhar Puri Gold Medal of the Indian Botanical Society for his contribution to many. "Samatha", has chosen him for the first ever "Jaiva Jagratha Puraskarm". The Indian Botanical Society has conferred upon him the first Prof. HY Mohan Ram Award for Excellence in Teaching and advancement of Plant Sciences.





प्रो. काटुंगल सुब्रहमण्यम मणिलाल

प्रो. काटुंगल सुब्रहमण्यम मणिलाल एक वनस्पतिशास्त्री है जिन्होंने उस समय भारत के टैक्सोनोमिस्ट को व्यवस्थित करने और इंडियन एसोसिएशन फॉर ऐन्जीओस्पर्म टैक्सोनॉमी (आईएएटी) की स्थापना करने की पहल की, जब अधिकांश लोग जैव विविधता को महत्व नहीं देते थे और जब टैक्सोनॉमी का विषय लगभग महत्वहीन एवं उपेक्षित था।

2. श्री मणिलाल का जन्म 17 सितंबर, 1938 को हुआ था। उन्होंने केरल विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक और मध्य प्रदेश के सागर विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातकोत्तर और पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। वह कालीकट विश्वविद्यालय के एमेरिटस प्रोफेसर हैं और वनस्पति विज्ञान में अनुसंधान और विकास के लिए भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, भारतीय वनस्पति सोसाइटी, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, सोसाइटी ऑफ ऐथनो बोटेनिस्ट, रॉयल सोसाइटी ऑफ लंदन, स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन जैसे विभिन्न संस्थानों और नीदरलैंड, जापान, सिंगापुर और मॉस्को के विभिन्न विश्वविद्यालयों से जुड़े रहे हैं।

3. एच.ए. वेन रहिदी द्वारा लैटिन में 12 खंडों में संकलित की गई हॉर्टस मालाबारिकस (गार्डन ऑफ मालाबार) पुस्तक मालाबार की वनस्पति संपदा पर छपी पहली पुस्तक है। यह महत्वपूर्ण कार्य, हालांकि 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में किया गया, तथापि, प्रो. मणिलाल द्वारा आधुनिक वनस्पति नामकरण से अंग्रेजी संस्करण लाए जाने तक वैज्ञानिक समुदाय के लिए दुर्लभ रहा। इसके अलावा, इस कार्य ने भारत के इतिहास और राजनीति तथा केरल की जन भाषा के रूप में मलयालम के विस्तार पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने विशेष रूप से केरल की जैव विविधता में "साइलेंट वैली", 'रेडियोधर्मी रसायनों द्वारा प्रदूषण, 'ऑर्किड ऑफ केरल', 'फूल की उत्पत्ति और विकास' जैसे व्यापक अनुसंधान कार्य भी किए हैं। उनका कालीकट विश्वविद्यालय को प्लांट टैक्सोनॉमी के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र बनाने तथा टैक्सोनॉमियों की एक नई पीढ़ी तैयार करने और विश्वविद्यालय में जैव ईंधन अनुसंधान केंद्र की स्थापना करने में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने राष्ट्र के लिए टैक्सोनोमी का औचित्य सिद्ध करते हुए वनस्पति अनुसंधानों के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और भाषा–विज्ञान संबंधी पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन किया है।

4. प्रो. मणिलाल भारतीय वनस्पति सोसाइटी के अध्यक्ष रहे हैं और उन्हें अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। नीदरलैंड की महारानी क्वीन बिएट्रिक्स ने नीदरलैंड और भारत की साझा धरोहर को बढ़ावा देने में योगदान देने और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ करने के प्रयासों के लिए श्री मणिलाल को "ऑफिसर इन द ऑर्डर ऑफ ऑरेंज–नेसौ" से सम्मानित किया। उन्हें पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा टैक्सोनॉमी के लिए शुरु किए गए 'जानकी अम्मल राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें स्वदेशी साइंस मूवमेंट द्वारा 'स्वेदशी शास्त्र पुरस्कार' प्रदान किया गया। प्रो. मणिलाल के योगदानों के लिए उनका चयन आईएएटी के वाई.डी.त्यागीस्वर्ण पदक और भारतीय वनस्पति सोसाइटी के विश्वम्भर पुरी स्वर्ण पदक के लिए किया गया है। "समता" ने उन्हें पहले "जैव जाग्रथ पुरस्कारम" के लिए चुना है। भारतीय वनस्पति सोसाइटी ने उन्हें वनस्पति विज्ञान के शिक्षण और विकास में उत्कृष्टता के लिए प्रथम प्रो. एच.वाई. मोहन राम पुरस्कार प्रदान किया है।